

भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक विस्फोटक वास्तविकता रहा है, जिसका विभिन्न क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव पड़ा है, जिसके परिणामस्वरूप देश की आर्थिक वृद्धि और विकास तीव्र गति से हुआ है। हालाँकि, इसने अनेक लाभ तो दिए हैं, लेकिन कुछ चुनौतियाँ भी दी हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव को सकारात्मक और नकारात्मक के रूप में देख सकते हैं:-

सकारात्मक प्रभाव

अगर हम सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करें तो इसके अंतर्गत निम्न तत्वों को शामिल करते हैं-

1. आर्थिक विकास: विदेशी निवेश में वृद्धि और व्यापार संबंधों में सुधार के कारण भारत की जीडीपी वृद्धि दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। आईटी और सेवा क्षेत्र अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदानकर्ता बनकर उभरे, जिससे रोज़गार सृजन हुआ और तकनीकी क्षमताएँ बढ़ीं।
2. रोज़गार के अवसर: वैश्वीकरण के कारण विनिर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी, खुदरा और दूरसंचार सहित विभिन्न उद्योगों में रोज़गार सृजन हुआ है। बुनियादी ढाँचे और ऑटोमोटिव जैसे क्षेत्रों में बढ़ते विदेशी निवेश ने कुशल और अकुशल रोज़गार के अनगिनत अवसर प्रदान किए हैं।
3. तकनीकी प्रगति: वैश्विक प्रौद्योगिकी और नवाचारों के संपर्क में आने से भारत की औद्योगिक और सेवा क्षमताएँ बेहतर हुई हैं। भारतीय कंपनियों ने वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाया, जिससे उत्पादकता में वृद्धि हुई और गुणवत्ता मानक बेहतर हुए।

नकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव के अंतर्गत हम निम्न क्षेत्रों का अध्ययन करते हैं-

1. आय असमानता: वैश्वीकरण के लाभ समान रूप से वितरित नहीं हुए, जिससे अमीर और गरीब के बीच की खाई बढ़ती गई। शहरी क्षेत्रों में उल्लेखनीय आर्थिक वृद्धि देखी गई, जबकि ग्रामीण क्षेत्र गरीबी और अवसरों की कमी से जूझते रहे।
2. सांस्कृतिक क्षरण: पश्चिमी संस्कृतियों और उपभोक्तावाद के प्रभाव ने पारंपरिक भारतीय मूल्यों और जीवनशैली में बदलाव लाए। वैश्विक ब्रांडों के प्रभाव ने स्थानीय व्यवसायों और सांस्कृतिक प्रथाओं को प्रभावित किया, जिससे सांस्कृतिक एकरूपता आई।
3. पर्यावरणीय चुनौतियाँ: वैश्वीकरण के कारण औद्योगिक विकास ने प्रदूषण और वनों की कटाई सहित पर्यावरणीय क्षरण को बढ़ावा दिया है। संसाधन-प्रधान उद्योगों पर अत्यधिक निर्भरता ने प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा दिया है।